P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

'दस बरस का भँवर' उपन्यास में मनोविकृति स्किजोफ्रेनिया की अभिव्यक्ति

सुरिन्दर कौर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
सी. जी. एम. कॉलेज, मोहलां,
श्री मुक्तसर साहिब

सारांश

वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हुई प्रगति के परिणामस्वरूप मनुष्य का जीवन स्तर तथा जीवन शैली पूर्णतः परिवर्तित हो गई है। उसके मानसिक स्तर तथा सोचने विचारने के ढंग में भी पर्याप्त अन्तर आया है। मनुष्य जन्म–मरन, स्वर्ग–नरक तथा मोक्ष प्राप्ति जैसे आध्यात्मिक विचारों से विमुख होकर जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को बौद्धिकता के पैमाने से मापने लगा है। वह जीवन की नश्वरता के सिद्धान्त को नकार कर अपने वर्तमान को अधिकाधिक सुखी, सुगम तथा समृद्ध बनाने हेतु लालायित है। अपनी असीमित इच्छाओं की पूर्ति की होड़ में वह पारम्परिक मूल्यों, मानकों, समाज यहां तक कि परिवार से भी कट गया है। फलतः आज का मनुष्य ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीते हुए भी क्षुब्ध रहता है क्योंकि जीवन की विकट परिस्थितियों में वह स्वयं को अकेला पाता है। ऐसे में वह मानसिक अशान्ति तथा अनेक मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है।

परन्तु इसका आशय यह नहीं है कि कालान्तर में मानसिक रोगों का कोई अस्तित्व ही नहीं था, अपितु इसका आशय यह है कि पहले की अपेक्षा मानसिक रोगियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। विभिन्न मानसिक रोगों में 'स्किजाफ्रेनिया' जिसे हिन्दी में 'मनोविदलता' कहा जाता है, सबसे गंभीर मानसिक विकृति है।

मुख्य शब्द : स्किजोफ्रेनिया, स्कीजीन, मनोभाजनोमान्द।

प्रस्तावना

'स्किजोफ्रेनिया' शब्द दो ग्रीक शब्दों स्कीजीन (Schizein) तथा फ्रेन (phren) के समन्वय से बना है। 'स्कीजीन' का अर्थ विभक्त होना तथा फ्रेन का अर्थ 'मस्तिष्क' है। इस प्रकार 'स्किजाफ्रेनिया (schizophrenia) का अर्थ खंडित मनस्कता यानी मानसिक विखंडन (Split of mind) होता है। चूंकि इससे व्यक्ति का मानस (mind) विखंडित या खंडित (Split) होता है, इसलिए उसका वास्तविकता के साथ सम्बंध विक्षिप्त या टूट जाता है तथा उसकी सांवेगिक प्रतिक्रियाएं वास्तविक परिस्थिति के प्रतिकूल होती हैं।[1]

मनोविज्ञान के पारिभाषिक शब्दकोश के अनुसार 'स्किजाफ्रेनिया' से तात्पर्यः–'मनोभाजनोमान्द एक गंभीर मानिसक रोग है। इसमें व्यक्ति का वास्तविकता (reality) और अपने परिवेश से नाता टूट जाता है। वास्तविकता व सामूहिकता के प्रति उदासीनता, तर्क के स्थान पर अपनी इच्छाओं की प्रधानता, चिन्तन के स्थान पर सवैर कल्पना (phantasy), निर्मूल भ्रम (hallucination), आत्मरत चिन्तन (Cautistic thinking) और विभ्रम (delusions) का अत्याधिक होना इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।[2]

इस संदर्भ में प्रसिद्ध मनोविज्ञानी होल्मस द्वारा दी गई परिभाषा भी उल्लेखनीय है। उनके अनुसार ''मनोविदलता एक गंभीर विकृति है जिसमें विभ्रम, व्यामोह तथा अथवा विक्षुब्ध चिन्तन प्रक्रिया सहित कार्यवाही ह्रास सम्मिलित होता है। इन लक्षणों का कम–से–कम 6 महीने तक जारी रहना आवश्यक होता है।[3]

यदि इस रोग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करें तो यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से ही मनुष्य इस भयानक मानसिक रोग का शिकार होता रहा है। अमेरिकन साइकोलॉजिकल ऐसोसिएशन के अनुसार '100 में से एक व्यक्ति में इस रोग के होने की संभावना प्रबल होती है।''[4]अपनी जटिलता तथा व्यापकता के कारण यह रोग मनोचिकित्सकों तथा मनोवैज्ञानिकों के लिए सदैव शोध तथा जिज्ञासा का विषय रहा है। इन शोधकार्यों के परिणामस्वरूप 'स्किजोफ्रेनया' से सम्बन्धित अवधारणाओं, लक्षणों तथा नाम में भी निरंतर परिवर्तन होते रहे हैं। कालान्तर में इसे साधारणतयाः पागलपन के नाम से ही

जाना जाता था। मशहूर ग्रीक मनोचिकित्सक हिप्पोक्रेटिज (460-370 B.C.) ने इस रोग को शारीरिक द्रव्यों में उत्पन्न असंतुलन का परिणाम बताया। बेलजियम के मनोचिकित्सक मोरेल (Moral 1960) ने अपने अध्ययनों के आधार पर ''इस रोग को डिमेन्स प्रीकाक्स (demence praecox) का नाम दिया जिसका अर्थ है अल्प आयु में मानसिक ह्रास (mental deterioration) का घटित होना।[5]

जर्मनी ने मनोचिकित्सक क्रेपलिन ने इसे ''डिमोन्सिया प्रीकाक्स (dementia-praceox) की संज्ञा दी जिसका तात्पर्य विशिष्ट संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं (dementia) तथा विकृति के शीघ्र आरम्भ (Precox) से लिया गया।''[6] उन्होंने मानसिक ह्रास के अतिरिक्त इस रोग के सम्बन्धित कुछ अन्य लक्षणों जैसे निष्क्रियता, भ्रान्ति तथा अन्तर्दृष्टि का अभाव इत्यादि पर भी प्रकाश डाला।

इस रोग के स्वरूप को अपेक्षाकृत अधिक सरल, स्पष्ट, तथा वैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट करने वाले मनोरोग वैज्ञानिकों में बलूलर (Blueler 1857-1939) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने इस रोग को मनोविदलता की संज्ञा देते हुए स्पष्ट किया कि ''इस रोग में विचार प्रक्रिया में विघटन, वास्तविकता, संवेगात्मकमता एवं प्रक्रियाओं में सुसंगति का अभाव पाया जाता है। आधुनिक सन्दर्भ में मनोविदलता से तात्पर्य व्यक्तित्व का पूर्ण विघटन है।''[7]

तत्पश्चात् अनेक मनोरोगविज्ञानियों– एडोल्फ मेयर, होक तथा पोलाटिन, हैरी स्टैक, सुलीभान, क्रेश्मर, कर्ट श्रांईडर इत्यादि ने इस दिशा में अनेक अनुसंधान किए। इन अनुसंधानों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्किजोफ्रेनिया से ग्रस्त व्यक्ति, वास्तविकता से दूर अपनी कल्पनाओं की दुनिया में विचरण करता है। उसमें चिन्तन तथा संवेगों सम्बंधी अनेक विकृतियां पाई जाती है। ऐसा व्यक्ति व्यामोह, विभ्रम, भाषा तथा लेखन सम्बन्धी भी अनेक विकृतियों से ग्रस्त होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

निः संदेह मनोविकृत विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांन्ति ला दी है, परन्तु समाज में मनोविकारों को लेकर अभी भी अनेक भ्रांत धारणाएँ प्रचलित हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार केवल दस प्रतिशत मानसिक रोगी ही मनोचिकित्सीय उपचार केन्द्रों तक पहुंच पाते हैं जबकि विश्व की एक लाख जनसंख्या में से औसतन पन्द्रह व्यक्ति मानसिक रोगों से ग्रस्त हैं। अंतः मानसिक रूप से स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु जनसाधारण को मनोविकृतियों के प्रति जागरूक करना ही प्रस्तुत शोध पत्र का ध्येय है।

आज हिन्दी उपन्यास का फलक इतना व्यापक हो चुका है कि व्यक्ति, परिवार या समाज से जुड़ी कोई भी समस्या इसकी सीमा से परे नहीं रह गई है। विशेषतः आधुनिक हिन्दी उपन्यासकारों ने तो अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय देते हुए मानव जीवन से जुड़ी प्रत्येक समस्या को अपने उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। व्यक्ति के मानसिक उद्वेलन से उपजी मानसिक अशान्ति, मानसिक विकार तथा उनसे उपजी अनेकानेक समस्याओं को भी विभिन्न उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रतिपादित है। ''दस बरस का भँवर, पत्ताखोर, शिगाफ़ विज़न इत्यादि इस विषय पर रचित मुख्य उपन्यास है। रवीन्द्र वर्मा जी ने अपने उपन्यास 'दस बरस का भँवर' में व्यक्ति को मानसिक स्तर पर पूर्णत अस्त–व्यस्त कर देने वाली गंभीर मनोविकृति स्किजाफ्रेनिया को चिन्तन का विषय बनाया है।

'दस बरस का भँवर' उपन्यास का बाईस वर्षीय रतन स्किजोफ्रेनिया से ग्रस्त है। वह एक पढ़ा–लिखा युवक है तथा एक स्कूल में अस्थायी रूप से अध्यापक के पद पर कार्यरत है। एक बार स्कूल की प्रबंधन कमेटी के एक सदस्य के बच्चे को परीक्षा में फेल कर देने के कारण उसे सबके सामने अपमानित होना पड़ता है। यहां तक कि विद्यार्थी द्वारा चांटा मार देने पर भी स्कूल के प्रधानाध्यापक कोई ठोस कार्यवाही न करके उसे थाने में रिपोर्ट लिखवाने की सलाह देते है। यह घटना रतन को मानसिक रूप से अशान्त, क्षुब्ध तथा विचलित कर देती है। ''सैंकड़ों आँखों के सामने पिटना और फिर उसे ही थाने जाने की सलाह मिलना–उससे बर्दाशत नहीं हुआ था। वह थाने की बजाय बार चला गया था और रात में घर लौटने की बजाय रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म की एक बेंच पर सो गया था।''[8]

वह एक पढ़ा लिखा बेरोजगार नवयुवक था। निरंतर असफलताओं ने उसे हताश कर दिया। धीरे धीरे उसमें स्किजोफ्रेनिया के लक्षण परिलक्षित होने लगे। उसका चिंतन और सम्भाषण विघटित होने लगा। वह अक्सर बेसिर–पैर की बातें सोचता रहता तथा अनर्गल वार्तालाप करता जो स्किजोफ्रेनिया का लक्षण है। वह आँगन में लगे नीम के पेड़ को देखते हुए सोचता ''कहाँ गई सारी चिड़ियाँ? क्या अपना पेड़ भूल गईं? या कोई और पेड़ याद आ गया? सारी चिड़ियाँ आसमान में एक साथ–मर तो नहीं सकतीं? चिड़ियों में सामूहिक हत्या या आगज़नी का रिवाज़ भी नहीं था।''[9]

वह अक्सर अनुपयुक्त, असंगत तथा अतार्किक बातें करता। अपने भाई नमन द्वारा पूछे जाने पर कि तुम क्या करना चाहते हो वह उत्तर देता है– मैं... रत्न ने कहा, '' मैं माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ना चाहता है–मैं

'लेकिन, नमन कुछ घबराया, 'तुम तो झांसी में किले की चढ़ाई पर ही हाँफ जाते हो।'

रतन मुस्कुराया 'असल में जहाँ रहूँ, वहाँ चोटी पर रहना चाहता हूँ।

नमन भाई की ओर टकटकी लगाए देख रहा था। 'आप देख लेना' रतन ने आह–सी भरी, 'एक दिन मैं अम्बानी बनूँगा या अमिर खान।''[10]

किसी महान् व्यक्ति को आदर्श मानना या उच्च लक्ष्य निर्धारित करना कोई असामान्य बात नहीं है। परन्तु एक सामान्य व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुकूल लक्ष्य का निर्धारण कर उसकी प्राप्ति हेतु उचित प्रयास भी करता है। जबकि स्किजोफ्रेनिक व्यक्ति असामान्य व्यवहार करता है। वह महानता को आदर्श न मानकर महानता के व्यामोह से ग्रस्त हो जाता है। व्यामोह से अभिप्राय झूठे अतार्किक विश्वासों से होता है। महानता के व्यामोह में ''व्यक्ति अपने आपको महान् दार्शनिक, भगवान का अवतार, महान, लेखक, कवि, समाज–सुधारक आदि समझने लगता है।''[11] ऐसे में रोगी व्यक्ति अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उचित

प्रयास न करके अपनी ही कल्पनाओं में खोया रहता है। विवेच्य उपन्यास के पात्र रतन भी महानता के व्यामोह से ग्रस्त है। रतन एक मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखता है। उसने स्नातक की डिग्री की है जिसके आधार पर कोई भी नौकरी करके वह अपनी आजीविका कमा सकता है। परंतु वह वास्तविकता को नकारकर अपनी तुलना कभी बड़े, उद्योगपति अंबानी तो कभी प्रसिद्ध फिल्मी सितारे आमिर खान से करता है। ऐसे में उसका मन किसी भी कार्य में नहीं रमता वह बार–बार नौकरियां छोड़ देता है। आमिर ख़ान से तो वह इतना प्रभावित है कि वह आमिर ख़ान के नृत्य की नकल ही नहीं करता था। वह आमिर ख़ान की तरह बोलता था, आमिर ख़ान की तरह हँसता था और उसी तरह रोता था।''[12] यही नहीं उसे रेस्तरां में बैठे हुए या सड़कों पर घूमते हुए अक्सर लगता कि लोग उसे आमिर ख़ान या उसका हमशक्ल समझ रहे हैं। वह अपनी आय का बड़ा हिस्सा उसकी फिल्मों को देखने में व्यय कर देता है। वह एक बार आमिर ख़ान से मिलने की जिद्द में उसके सुरक्षा–कर्मियों से उलझ पड़ता है। वह यह कहकर जबर्दस्ती अन्दर जाना चाहता है कि आमिर खान उसे जानता है, वह पहले भी उसे मिल चुका है, अपने इस मिथ्यात्मक सोच पर आधारित व्यवहार के कारण उसे जेल की हवा भी खानी पड़ती है। अपनी काल्पनिक दुनिया में विचरण करते हुए वह अपनी प्रेमिका सपना से भी एक हीरो की तरह ही व्यवहार करता है। यहां तक कि एक दिन हंसी–हंसी में वह अचानक हिंसक होकर उसका बलात्कार कर बैठता है।

नौकरी या व्यवसाय के क्षेत्र में भी उसका यह व्यामोह आढ़े आ जाता है। वह स्वयं को धीरूबाई अंबानी से भी श्रेष्ठ समझता : 'धीरूबाई अम्बानी। उसकी शुरूआत मुझसे बदतर थी। मैं ज़्यादा पढ़ा लिखा हूं। ज़हीन हूं।''[13] उसे लगता मैं ''नौं से पाँच की नौकरी करने के लिए पैदा नहीं हुआ हूं। इसलिए वह दूसरी बार नौकरी छूटने पर भी दुःखी होने की बजाय रेस्तरां में जाकर बीयर पीते हुए कहता है ''इस धरती पर मेरा अद्वितीय जीवन छोटी मोटी नौकरियों पर खर्च करने के लिए नहीं है। मुझे बड़े काम करने हैं। दूर खड़ी चोटियां मुझे अपनी ओर खींच रही हैं गगनचुम्बी चोटियाँ, जिनके माथे पर हिम के टीके हैं। मैं अभी नीचे घाटी में खड़ा उन चोटियों के मस्तक को निहार रहा हूं जैसे अर्जुन तीर छोड़ने के पहले अपने लक्ष्यों को एक आँख से देखता है। देखो, चोटी का केवल श्वेत, उज्ज्वल चकमता हुआ टीका। शाश्वत विजय का चिह्न।[14]

विभ्रम स्किजोफ्रेनिया के रोगियों में पाया जाने वाला एक अन्य मुख्य लक्षण है। इसमें रोगी किसी व्यक्ति या वस्तु को उसकी अनुपस्थिति में भी अनुभव करता है। ''रोगी को दृष्टि, स्वाद, श्रवण, स्पर्श तथ्य गन्ध संवेदना से सम्बन्धित विभ्रम होते हैं।''[15] फिल्म सिटी में लगे 'देवदास' फिल्म के भव्य सैट को देखते हुए ''रतन को अचानक लगा कि विराट् सैट पर दूर बरामदे में दिलीप कुमार अकेला लड़खड़ाता हुआ चला जा रहा है.... वहाँ और कोई नहीं था.... न कोई आदमी, न कैमरा, न ट्रॉली, न लाइट... जैसे यह कोई फिल्म का सैट न हो, शहर का कोई हिस्सा हो। वह उसी ओर भागा ताकि फर्श पर गिरते हुए देवदास को सहारा दे सके। इसके पहले वह सैट की सीढ़ियों पर पैर रखे, दो सुरक्षाकर्मियों ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया और गेट की ओर ले चले।''[16]

ऐसे रोगियों में संवेगों से सम्बन्धित भी अनेक विकृतियां पाई जाती हैं। इनका अपना संवेगों पर नियंत्रण नहीं के बराबर होता है। एक बार रतन के ''दोस्त मोहन ने उसे साहू के सामने छोड़ा था जहां उसकी हीरो हाँडा पार्किंग में थी। वह उसी ओर बढ़ रहा था जब अचानक आखिरी शो खत्म हुआ और लोग बाहर आने लगे। लोगों के आगे एक लड़की थी। वह आमिर ख़ान की प्रेमिका का लिबास पहने थी। जब कुछ और नज़दीक आई तो रतन को लगा कि वह पर्दे की नायिका ही थी जो शो खत्म होने पर बाहर निकल आई थी। वह दाहिनी और मुड़ गई जहां से रतन आ रहा था। उसका शरीर स्वायत्त हो गया और वह पलटकर लड़की के पीछे चलने लगा। उसके पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे।''[17] इसके पश्चात् उसे पता ही नहीं चला कैसे वह कालगर्ल्स के अड्डे पर पहुंच गया।

इसके अतिरिक्त स्किजोफ्रेनया के कुछ अन्य लक्षण जैसे निष्क्रियता परिस्थितियों तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति उदासीनता, एकान्तप्रियता इत्यादि भी रतन में दृष्टिगोचर होते हैं। जिनके आधार पर मनोचिकित्सक डॉ. पांडे उसे स्किजोफ्रेनिया का रोगी घोषित कर देते हैं। उनके अनुसार उसका कोई पक्का ईलाज असम्भव है क्योंकि रोग दस साल पुराना हो चुका है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्किजोफ्रेनिया (मनोविदलता) एक गम्भीर मानसिक रोग है। इससे ग्रस्त व्यक्ति स्वयं के लिए ही नहीं कई बार समाज के लिए भी अहितकारी सिद्ध होता है। यदि समय रहते इस रोग का निदान तथा उपचार न किया जाए तो यह और भी गंभीर रूप धारण कर लेता है। विवेच्य उपन्यास में हम देखते हैं कि रतन के रोग की पहचान उसके प्रारम्भ होने के दस वर्ष पश्चात् होती है जिससे उसका रोग लाईलाज हो जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि साधारण जन में इस रोग के प्रति अनभिज्ञता इसके उन्मूलन के लिए एक बड़ी चुनौती है। विवेच्य उपन्यास इस रोग के लक्षणों की पहचान तथा निदान हेतु एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो मानसिक संघर्षों से जूझ रही समकालीन तथा भावी पीढ़ी के लिए अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मिश्र, ब्रज कुमार–मानस रोग असामान्य मनोविज्ञान, पी. एच. आई, लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ 301।*
2. *शेरजंग निर्मला–मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्दकोश, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ 153।*
3. *सुलेमान, मुहम्मद (डॉ0)– असामान्य मनोविज्ञान, विषय और व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ–335*
4. *सिंह, अरूण कुमार– आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2016।*

5. *शर्मा, संजीव कुमार (डॉ0) अग्रवाल अवधेश (डॉ0)–असामान्य मनोविज्ञान (मनोविकृति विज्ञान), निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण –2018, पृष्ठ– 149।*
6. *आनन्द विनती, (डॉ0)–मनोविकृति विज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2013, पृष्ठ–149।*
7. *शर्मा, संजीव कुमार (डॉ0), अग्रवाल, अवधेश (डॉ0)–असामान्य मनोविज्ञान (मनोविकृति विज्ञान) निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2018 पृष्ठ 150।*
8. *वर्मा, रवीन्द्र–दस बरस का भँवर, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007, पृष्ठ 27।*
9. *वही, पृष्ठ–13*
10. *वही, पृष्ठ–72*
11. *शर्मा, संजीव कुमार (डॉ0), अग्रवाल, अवधेश (डॉ0) असामान्य मनोविज्ञान (मनोविकृति विज्ञान) निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2018 पृष्ठ 152।*
12. *वर्मा,रवीन्द्र–दस बरस का भँवर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2017, पृष्ठ 53।*
13. *वही–पृष्ठ 68*
14. *वही– पृष्ठ 68*
15. *शर्मा, संजीव कुमार (डॉ), अग्रवाल, अवधेश (डॉ0) असामान्य मनोविज्ञान (मनोविकृति विज्ञान) निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2018, पृष्ठ 153।*
16. *वर्मा, रवीन्द्र–दस बरस का भँवर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2007, पृष्ठ–129।*
17. *वही पृष्ठ –101*